A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

सितार वादन के घराने एवं उनकी विशेषताएँ

Kajal Sharma[2], Dr. Monika Dixit[2]

1 Research Scholar, Assistant Professor, Department of Music, Agra College, Agra, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra.
2 Associate Professor, Music Dept., Kishori Raman Women's Post Graduate College, Mathura, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra.

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का व्यवहारिक ज्ञान परंपरागत संगीत के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रगतिशील रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में घराना परम्परा का अस्तित्व भारतीय संगीत की एक प्रमुख विशेषता है। घराना का अर्थ है - वंश वैशिट्य। किसी घराने से सम्बद्ध शिष्यों को उस घराने की रीतियों, अनुशासन तथा कायदों (नियमों) का पालन करना होता है। अनेक पीढ़ियों तक यह परम्परा चलने पर ही वह घराना एक 'घराने' की प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। ध्रुवपद की चार बानियों के नियमों के आधार पर घराना परम्परा विकसित हुई। ख्याल के प्रचलन के उपरान्त ख्याल के भी विभिन्न घरानों का निर्माण हुआ। इसी प्रकार वाद्य संगीत में अवनद्ध वाद्य तथा तन्त्र वाद्यों के विभिन्न घरानों का प्रचार हुआ। सितार वादन के घरानों में सेनिया घराना आधारभूत घराना माना जाता है। सेनिया घराना तानसेन की वंश तथा शिष्य परम्परा से सम्बन्धित है। सेनिया परम्परा से सितार वादन के विभिन्न घराने विकसित हुए। उदाहरणार्थ - जयपुर घराना, इन्दौर घराना, विष्णुपुर घराना आदि।

मुख्य शब्द - *घराना, सेनिया घराना, वादन शैली, ध्रुपद अंग, ख्याल अंग*

प्रस्तावना

घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट धरोहर है। भारतीय संगीत प्राचीन काल से ही अपने वैशिष्ट्य तथा अस्तित्व को सदियों तक संरक्षित रखने में समर्थ हुआ है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का व्यवहारिक ज्ञान परंपरागत संगीत के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ा है। डॉ0 सुशील कुमार चैबे के अनुसार ''घराना'' ऐसी विशेषता हिन्दुस्तानी संगीत ही में पाई जाती है। संसार के और किसी संगीत में घरानों की प्रथा नहीं है। ऐसी संकल्पना का अस्तित्व संसार के और किसी संगीत में नहीं रहा है। यह कहना गलत न होगा कि 'घराना' हिन्दुस्तानी संगीत ही की देन है।[1] संगीत परम्परा में जब किसी संगीतज्ञ द्वारा किसी नवीन पद्धति, तकनीक तथा अलंकारों की धारा का प्रयोग करने और इन्हीं विशेषताओं को शिष्यों द्वारा अपनाने व प्रचार करने से एक घराने की उत्पत्ति होती है। 'घराना' एक ऐसा माध्यम है जो हमारे संगीत के ज्ञान की रक्षा कर नई पढ़ी को हस्तान्तरित करता है। साधारणतयाः घराना शष्द के अर्थ से अभिप्राय वर्ग, सम्प्रदाय, परिवार, कुटुम्ब, परम्परा आदि से होता है, परन्तु व्यवहारिक अर्थ के अनुसार रीति, पद्धति, स्टाइल, शैली होता है। 'घराना'से घर शब्द का बोध होता है। घर का अर्थ है - वंश तथा 'घराना' का अर्थ है - वंश वैशिष्ट्य।

ओ0 गोस्वामी के मतानुसार ''घराना ऐसा सम्प्रदाय या वर्ग है जिनके संस्थापकों ने अपनी मेहनत व लगन से अपनी संगीत-साधना करके अपने कला-कौशल के बल पर प्रसिद्धि प्राप्त की, इन्होंने शास्त्रों पर आधारित संगीत के क्रियात्मक रूप में कुछ नम्र प्रयोग करके उसे अपनी मनोवृत्ति के अनुसार मधुर व आकर्षक बनाया और अपने शिष्यों को सिखाया जो अनेक पीढ़ियों की परम्परा से विशिष्ट घरानों के रूप में जानी जाने लगी।''[2]

वामनराव देशपाण्डे के अनुसार ''प्रत्येक घराना किसी एक प्रभावशाली गुरू की आवाज की प्रकृति पर आधारित होता है। उस घराने से सम्बद्ध शिष्यों को उस घराने की रीतियों, अनुशासन व कायदों का पालन करना होता है, अनेक पीढ़ियों तक यह सिलसिला चलने पर ही 'घराना' घराने की प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।''[3]

गायन, वादन तथा नृत्य तीनो में विभिन्न घराने प्रचलित हुए हैं। प्रबन्ध गायन के उपरान्त ध्रुवपद गायन शैली प्रचार में आई। ध्रुवपद की चार बानिया यथा गौड़बहार बानी, खण्डार बानी, डागुर बानी तथा नोहार बानी के नियमों के आधार पर घराना परम्परा का विकास हुआ। ध्रुवपद के पश्चात ख्याल गायन प्रचलित हुआ तथा इसके भी विभिन्न घरानों का निर्माण हुआ। वाद्य संगीत के अन्तर्गत तन्त्र वाद्यों में सितार, सरोद, रबाब आदि तथा अवनद्ध वाद्यों में तबला व पखावज के विभिन्न घरानों का प्रादुर्भाव हुआ। सितार वादन के घरानो में सेनिया घराना आधारभूत घराना माना जाता है। सेनिया परम्परा से सितार वादन के विभिन्न घराने विकसित हुए। उदाहरणार्थ - जयपुर घराना, लखनऊ घराना, इमदादखानी घराना (इटावा), इन्दौर घराना, मैहर घराना आदि।

शोध प्रविधि - शोध कार्य में विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र - उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में वाद्य संगीत के अन्तर्गत सितार वादन के प्रमुख घरानों की विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

साहित्य अवलोकन

तन्त्रवाद्यों के क्षेत्र में वंश तथा शिष्य परम्परा में पीढ़ी दर पीढ़ी कुछ नवीन तथा सूक्ष्म परिवर्तनों से विभिन्न 'वादन शैलियों' तथा 'बाजों'का निर्माण हुआ। इन्ही 'वादन शैलियों'तथा 'बाजों' से विभिन्न घरानों का प्रादुर्भाव हुआ। संगीत में घरानों की परम्परा 19वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुई जिसका श्रेय तानसेन के वंशजों को जाता है। तानसेन की वंश परम्परा 'सेनिया घराना' कहलाई। उत्तर भारतीय संगीत में तन्त्री वाद्यों का मूल घराना 'सेनिया घराना'माना जाता है जिसे तन्त्री वाद्यों का मूल घराना भी कहते हैं। विद्वानों का मत है कि तानसेन के वंशज मुख्यतः दो सम्प्रदायों में विकसित हुए जिनमें पुत्र वंशज 'रबाबिए' तथा पुत्री वंशज 'बीनकार' कहलाए। सितार वादन के क्षेत्र में भी सेनिया घराना एक प्रमुख घराना है जिसमें से सितार वादन के विभिन्न घराने विकसित हुए।

सेनिया घराना

सेनियों के घराने मुख्य रूप से तीन भागों में विभक्त है। पहला घराना तानसेन के सबसे छोटे पुत्र बिलास खाँ के नाम से प्रचलित हुआ, जिनके वंशज बनारस में बस गए तथा लखनऊ और उसके आस-पास के राजा-नवाबों के दरबारों में नियुक्त हुए। इनके ही द्वारा तन्त्रकारी का पूर्वी बाज विकसित हुआ। इस घराने के वादक वीणा और रबाब बजाने के साथ-साथ ध्रुपद गायन में भी श्रेष्ठ थे। सेनियों का दूसरा घराना सूरतसेन से निर्मित हुआ। इस घराने के वंशजों एवं शिष्यों ने अपना निवास जयपुर में बनाया। इस घराने के संगीतज्ञों ने सितार वादन का प्रचार एवं प्रसार बहुत ही निपुणता से किया जिसके कारण इसे सितार वादन का जयपुर सेनिया घराना भी कहते हैं। इसी घराने में तन्त्री वादन के पश्चिमी बाज का विकास हुआ। तीसरे घराने का विकास वीणा वादक मिश्री सिंह से हुआ।[4]

सेनिया घराने के सितार वादकों में फिरोज खाँ, मसीत खाँ, दूल्हे खाँ, रहीम सेन, अमृतसेन सुप्रसिद्ध सितार वादक हुए। मसीत खाँ द्वारा एक नवीन गत शैली का निर्माण किया गया जिसके मिजराब के बोल निश्चित थे। मसीत खाँ के शिष्य रज़ा खाँ ने एक नई गत शैली का निर्माण किया जो दुत लय में बजाई जाती थी। रहीम सेन ने मसीतखानी गत वादन शैली में मीड़ आलाप तथा जोड़ का काम सम्मिलित कर सितार वादन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

जयपुर घराना

मियाँ तानसेन के द्वितीय पुत्र सूरत सेन के वंशज प्रसिद्ध सितार वादक मसीत खाँ जयपुर मे निवास करने लगे। यहीं पर इनके वंशजों तथा शिष्यों ने सेनिया घराना की परम्परा को आगे बढ़ाया और यह घराना जयपुर सेनिया घराना के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस घराने के सितार वादकों में रहीमसेन, अमृतसेन, निहालसेन, अमीर खाँ, बरकतउल्लाह खाँ, आशिक अली खाँ, मुश्ताक अली खाँ, देवव्रत चौधरी, प्रतीक चौधरी के नाम उल्लेखनीय हैं।

विशेषताएँ

1. आलाप में कम से कम मिजराब का प्रयोग करना जयपुर सेनिया घराने की प्रमुख विशेषता है।

2. इस घराने की गतें ध्रुपद अंग पर आधारित होती हैं। गत में स्थाई बजाने के बाद दूसरे आवर्तन में मंझा बजाने की परम्परा है। मंझा बजाने के पश्चात अन्तरे का वादन किया जाता है।

3. गतों में मीड़, गमक, तोड़े, ठाह, दुगुन, आड़-कुआड़, सूत, तान तथा मिजराब के बोलों का अत्यधिक प्रयोग होता है।

4. सितार के बाज को परिष्कृत करने हेतु वीणा वादन, ध्रुपद और ख्याल गायन के प्रमुख अंगों का पालन करते हुए, अपनी कल्पना और विवेक से उसे परिवर्धित किया।

5. वीणा और ध्रुपद अंग का आलाप व जोड़-आलाप का वादन किया जाता है। ख्याल की फिक्रेबन्दी का आश्रय लेकर सितार वादन में फिक्रे तत्पश्चात तोड़े का वादन किया जाता है।

6. विभिन्न सौन्दर्य उपकरण जैसे मीड़, कण, खटका, मुर्की, सूत, कृन्तन घसीट के प्रयोग के साथ-साथ लड़न्त क्रिया को गतों के मध्य प्रयोग करते हैं तथा झाला वादन को अलंकृत करने हेतु पखावज व तबले के विभिन्न छन्दों के प्रयोग के अतिरिक्त बीन के झालों के अनुसरण से तथा रबाब और सुरसिंगार के जवों की उलट-पलट का अनुसरण कर झाला वादन को और अधिक सौन्दर्यात्मक रूप से प्रदान किया गया।

7. राग वादन के प्रस्तुतिकरण के लिए सर्वप्रथम आलाप, जोड़-आलाप, मसीतखानी गत, रजाखनानी गत का वादन तथा उसमें विभिन्न प्रकार के तोड़े व तिहाइयों के पश्चात झाला बजाकर वादन समाप्त करना, यह क्रम निश्चित किया गया है।[5]

मैहर घराना

मैहर घराने के मूल पुरुष बाबा अलाउद्दीन खाँ हैं। मैहर घराने की उत्पत्ति तानसेन की पुत्री वंशजों द्वारा रामपुर - सेनिया घराना से मानी जाती है। मैहर घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की वादन परम्परा में एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह घराना तकनीक की दक्षता, रचनात्मकता और परंपरा के अद्भुत मिश्रण के लिए पहचाना जाता है। इस घराने की संगीत शैली, तकनीकी बारीकियां और गहन रागदारी इसके विशिष्ट अस्तित्व को प्रमाणित करती है। इस घराने की परंपरा मुख्य रूप से गुरू-शिष्य परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ी, जिससे यह शैली मौखिक रूप से संरक्षित रही।

विशेषताएँ - बाबा अलाउद्दीन खाँ ने सितार वादन शैली में निम्न शैली का प्रचलन किया -

1. आलाप-जोड़ालाप, झाला, विलम्बित गत, द्रुतगत गत, तानें लड़ी, लड़गुथाव, लड़लपेट कतर, तारपरन, झाला ठोंकझाला - यह क्रम आरम्भ किया और आज भी यही परम्परा प्रचलित है।

2. अपनी शिक्षा पद्धति में शिष्य को सर्वप्रथम सुरमन्त्र, पलटा, बोल, सपाटतान, लड़ीतान, झाला, कृनतन, जमजमा, मीड़ और गमक सिखाते तत्पश्चात गतकारी तथा अन्त में आलापचारी की शिक्षा देते थे।

3. आलापचारी के अन्तर्गत सेनिया वादन शैली के अनुसार सर्वप्रथम छेड़, विलम्बित, स्थाई, अन्तरा, संचारी, आभोग, विलम्बित मध्य, मध्यतान, द्रुततान, झाला (ठोंकझाला, लड़ी, लड़गुथाव, लड़लपेट, तारपरन, धुआँ, माठा) इस प्रकार आलापचारी वादन किया जाता था।

4. गतकारी में विलम्बित गत, मध्य विलम्बित गत, मध्यगत, मध्यद्रुत गत, द्रुतगत, अतिद्रुत गत का वादन कराते थे।

पंडित रविशंकर, पंडित निखिल बनर्जी, अनुष्का शंकर, इन्द्रनील भट्टाचार्य, पं0 कार्तिक कुमार आदि ने मैहर घराने की लोकप्रियता को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई।

इटावा घराना

इटावा घराना जिसे इमदादखानी घराना भी कहा जाता है, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रमुख सितार वादन के घरानों में से एक है। यह घराना विशेष रूप से सितार व सुरबहार वादन के लिए प्रसिद्ध है। इटावा घराने की नींव उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में उस्ताद इमदाद खाँ साहब ने रखी थी। उनके द्वारा विकसित वादन शैली इतनी प्रभावशाली थी कि उनके घराने को उनके नाम से भी जाना गया - इमदाद खानी घराना। यह घराना सीधे तौर पर तानसेन की परम्परा से जुड़ा माना जाता है। यह घराना तबला और सितार की संगति को भी संतुलन के साथ प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है। उस्ताद इमदाद खाँ साहब के पुत्र उस्ताद इनायत खाँ तथा पौत्र उस्ताद विलायत खाँ ने उनकी वादन परम्परा को आगे बढ़ाया जो इटावा घराने के नाम से प्रसिद्ध हुई।

विशेषताएँ - इटावा घराने की वादन शैली में निम्नलिखित विशेषताएँ समाहित हैं।

1. गायकी अंग की प्रधानता - इटावा घराने की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सितार को इस प्रकार बजाया जाता है कि मानो कोई राग गा रहा हो।

2. मुलायम मीड़ और कण - मीड़ के द्वारा राग की भावनात्मक गहराई को दर्शाया जाता है। मुलायम मीड़ और कण इस घराने की पहचान है।

3. विविधतापूर्ण तानों को प्रयोग - इस घराने में तानों का बड़ी चपलता, विविधता और स्पष्टता के साथ बजाया जाता है।

4. बोल - तान और गतिक लयकारी - तानों के भीतर ताल के बोलों के साथ प्रयोग और जटिल लय-संरचाओ का संतुलन इस घराने की लय प्रस्तुति को विशेष बनाता है।

A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

5. सुरबहार वादन की परम्परा - इटावा घराने में सुरबहार जो सितार से आकृति में बड़ा तथा गम्भीर होता है, की भी उच्च कोटि के वादन की परम्परा रही है।

कण्ठ - संगीत का माधुर्य एवं कोमलता सितार को प्रदान करने के अतिरिक्त इटावा - परिवेश से सम्बद्ध कलाकारों ने सितार वादन को कण्ठ के समस्त अंगो सहित समग्र रूप से प्रदर्शित करने पर जोर दिया। उक्त परम्परा के प्रस्तुतीकरण की उनकी शैली ने न केवल सितार-वादन को लोकप्रिय बनाया, अपितु उसे शास्त्रीय संगीत की गरिमा के अनुरूप सुसम्बद्ध रूप भी प्रदान किया ।[6] इटावा घराना सितार वादन के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अत्यन्त उच्च स्थान रखता है। इसकी परम्परा में भाव प्रवीणता, तकनीकी दक्षता और रागदारी का सन्तुलन है। इस घराने ने सितार वाद्य को एक गूढ़ और सूक्ष्म वाद्य के रूप में स्थापित किया। इस घराने के सबसे प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खाँ माने जाते हैं। उनकी वादन शैली को 'विलायती बाज' के नाम से जाना गया। इस शैली में उन्होंने गायकी अंग को पूर्ण रूप से सितार पर उतारा। उस्ताद बिलायत खाँ की वादन शैली अत्यन्त भावपूर्ण और मधुर मानी जाती है। सुजात खाँ, उस्ताद शाहिद परवेज़, पं0 बुद्धादित्य मुखर्जी वर्तमान में इटावा घराना परम्परा के प्रमुख कलाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

इंदौर घराना

उस्ताद बन्दे अली खाँ इंदौर घराने के मूल पुरुष माने जाते हैं। इस घराने का प्रारम्भ 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से माना जाता है। इस घराने के संगीतज्ञों में उस्ताद वाहिद खाँ तथा उनके समकालीन संगीतज्ञ उस्ताद बन्दे अली खाँ, मुरव्वत खाँ, मुराद खाँ (बीनकार) अब्दुल लतीफ खाँ (बीनकार), मुहम्मद खाँ, देसाई फरीदी, उस्ताद रजब अली खाँ (गायक), जाफर खाँ, सज्जाद हुसैन खाँ, उस्ताद अमीर खाँ तथा उस्ताद हलीम जाफर खाँ का नाम सम्मिलित है। बीनकार बन्दे अली खां ग्वालियर के श्रेष्ठ संगीतज्ञ उस्ताद हद्दू खां के दामाद तथा सेनिया घराने के सुप्रसिद्ध बीनकार उस्ताद सादिक अली खां के पुत्र थे। आधुनिक समय में इंदौर घराना सितार वादन के श्रेष्ठ घरानों में से एक है।

विशेषताएँ

1. इस घराने के सितार वादन में आरोह - अवरोह के साथ जोड़ के टप्पों का प्रयोग किया जाता है तथा वादन का आरम्भ आलाप से प्रारम्भ कर जोड़, विलम्बित गत, द्रुतगत और फिर झाले के उपरान्त ठोंक झाले का वादन किया जाता है।

2. किसी भी स्वर से उच्च सप्तकों के स्वरों की अनुगूंज का वादन आरम्भ करने के पूर्व प्रयोग इस घराने के सितार वादन की मुख्य विशेषता है।

3. राग का स्पष्ट चित्र उभारने के लिए द्रदा, द्र, रदा आदि मिजराब के बोलों का प्रयोग तथा जमजमा, उचाट आदि के साथ घसीट, कण, मीड़ के विभिन्न प्रकारों व भेदों का प्रचुरता से प्रयोग एवं इनके द्वारा खण्डित मात्राओं का भरण भी इस घराने के सितार वादन को विचित्रता प्रदान करता है। इन सभी अलंकरणों के अतिरिक्त कुछ अन्य विशेषताएँ हैं जो इस प्रकार हैं -

1. चपका अंग
2. ठाह-दुगुन बाज
3. उचाट लड़ी
4. गतभरण और गत आमद
5. झर - भरन
6. गत अंग झाला
7. ठोंक झाला
8. मिजराब की काट तराश
9. लड़न्त का बाज
10. खटका, हिरक्का, लहक मीड़, खटका मीड़

11. जोड़ का विस्तार करते हुए दो तारों को एक साथ अलग-अलग परदों पर बजाना।

12. मिजराब के द्रा, रदा, द्र आदि प्रकारों का वादन भी इस घराने के सितार वादन की विशेषताओं में सम्मिलित है।[7]

आधुनिककालीन सितार वादकों में उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खाँ को इंदौर घराने के सितार वादकों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इन्होंने अपने पूर्वजों द्वारा विकसित शैली में कुछ और चीजों का समावेश करके अपनी एक अलग शैली विकसित की जिसे जाफरखानी बाज के नाम से जाना जाता है। उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खाँ साहब के अनुसार, "The Need of Jaffarkhani Baaj initially arose because of certain limitations of Maseetkhani Baaj most Sitarist when playing in Vilambit use. Standardised combinations of finger movements of the right hand in the Maseetkhani Baaj in the vilambit mode, while in broadly follow the maseetkhani bol patterns. We made some modifications since the gats of certain Raagas do not fit well within a fix bol pattern. The full form of some Raagas do not find Expression within the Maseetkhani got and this is an inadequacy of this style – So the enhance the face of Raga. We adopted the method of creating fractions of beats and filling within the bol of Mizrab."[8]

विष्णुपुर घराना

विष्णुपुर घराना का उदय 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 19वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में हुआ, ऐसा विद्वानों का मत है। इस घराने का प्रारम्भ तानसेन के वंशज सेनिया घराने के प्रसिद्ध गायक बहादुर खाँ द्वारा माना जाता है।[9] कुछ विद्वानों का मत है कि विष्णुपुर घराने की स्थापना रामशंकर भट्टाचार्य ने राजा रघुनाथ सिंह द्वितीय के शासनकाल में की थी। विष्णुपुर घराने की सितार वादक मीता नाग के अनुसार रामशंकर भट्टाचार्य विष्णुपुर घराने के संस्थापक है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने गदाधर चक्रवर्ती से प्रशिक्षण प्राप्त किया था जो स्वयं बहादुर सेन के प्रमुख शिष्य थे। रामशंकर भट्टाचार्य ने विष्णुपुर में मल्लेश्वर मन्दिर के पास निवास किया और वहाँ संगीत शिक्षा प्रदान की। उनके प्रमुख शिष्यों में जदुनाथ भट्टाचार्य (जदु भट्ट) शामिल थे जिन्होंने बाद में इस परम्परा को आगे बढ़ाया।

विशेषताएँ -

1. ध्रुपद परम्परा की प्रधानता - विष्णुपुर घराना मुख्यतः ध्रुपद शैली पर आधारित है जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक प्राचीन और गम्भीर शैली है। इस घराने के कलाकार ध्रुपद गायन एवं वादन दोनों में ही प्रवीण थे।

2. सरल और भावपूर्ण प्रस्तुति - इस शैली में रागों का विस्तार सरलता से किया जाता है जिसमें अत्यधिक अलंकरण या जटिल लयकारी नहीं होती। राग के भावों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

3. ख्याल और ध्रपद का प्रभाव - यद्यपि यह घरान ध्रुपद पर आधारित है, फिर भी इसके कलाकारों ने ख्याल पद्धति को अपनाकर इस शैली में दोनों का समन्वय किया।

4. धीमा विस्तार - विलम्बित आलाप तथा राग का गम्भीर और गहरा प्रस्तुतिकरण।

5. मीड़ और सुगम गमक - स्वर को जोड़ने की कला अर्थात मींड का सुंदर प्रयोग होता है।

आधुनिक सितार वादकों में विष्णुपुर घराने के श्रेष्ठ वादकों में मणिलाल नाग का नाम सम्मान से लिया जाता है।

निष्कर्ष

सितार वादन के घरानों में प्रत्येक घराना अपनी एक विशिष्ट पहचान व महत्व रखता है। प्रत्येक घराने की अपनी शैलीगत विशेषता है जो उसे दूसरे से पृथक बनाती है। यथा सेनिया घराने की वादन शैली में ध्रुपद अंग, मीड़, आलाप तथा जोड़ का काम तथा जयपुर घराने में इनके साथ ही गत में स्थाई के बाद मंझा बजाने की परम्परा, आड़-कुआड़, सूत, मीड, कण खटका, मुर्की, कृन्तन, घसीट आदि के प्रयोग के साथ-साथ लड़न्त क्रिया को गतों के मध्य प्रयोग करते हैं। मैहर घराने में अलाप, जोड़ा आलाप, झाला, गत (विलम्बित तथा द्रुत) तानें लड़ गुथाव, लड़लपेट कतर, तारपरन ठोंकझाला, कृन्तन, जमजमा, मीड़ आदि का प्रयोग एवं गतकारी में विलम्बित गत, द्रुतगत, अतिद्रुत गत का वादन किया जाता है। इटावा घराने की वादन शैली में गायकी अंग की प्रधानता, मुलायम मीड़ तथा कण का प्रयोग, बोलतान, गतिक लयकारी एवं सुरबहार वादन की परम्परा इटावा

घराने को सितार के घरानों में विशिष्ट पहचान दिलाती है। इंदौर घराने के वादन शैली में टप्पों का प्रयोग उसकी अपनी प्रमुख विशेषता है। विष्णुपुर घराने की वादन शैली में ध्रुपद अंग की प्रधानता होते हुए भी कलाकारों ने ख्याल शैली तथा ध्रुपद शैली का समन्वय किया। इस प्रकार यदि देखा जाय तो सितार वादन के क्षेत्र में भारतीय शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता को बढ़ाने में सितार वादन के सभी घरानों का पूर्ण योगदान है। सभी का उद्देश्य संगीत कला के सौन्दर्य पक्ष तथा कलापक्ष में वृद्धि करना है।

सन्दर्भ सूची

1. चौबे डॉ0 सुशील कुमार (1977) 'संगीत के घरानों की चर्चा' उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी लखनऊ, पृष्ठ – 15
2. जैन, डॉ0 वीणा (2008) 'सेनिया घराना और सितार वादन शैली'कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली पृष्ठ – 01
3. वही, पृष्ठ – 02
4. सिंह डॉ0 रितु, (2019) 'सितार एवं सरोद वादन का शास्त्रीय स्वरूप' कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ – 159
5. वही, पृष्ठ - 164
6. भटनागर रजनी, (2006) 'सितार वादन की शैलियाँ' कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली पृष्ठ – 187
7. राय, बी0एस0 सुदीप (2004) 'जहान ए सितार'कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली पृष्ठ - 170
8. श्रीवास्तव नैन्सी (2011) 'सितार वादन - प्रविधि एवं शैली संग्रह' कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली पृष्ठ – 103
9. राय, बी0एस0 सुदीप (2004) 'जहान ए सितार' कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्लीपृष्ठ - 189